सरसों की खेती

कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 30–31

सरसों की खेती

प्रियंका जादौन[1], अरविन्द कुमार सिंह[2], यशवन्त गेहलोत[3]

[1]ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी,
किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, (म.प्र.)
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर आई.टी.एम यूनिवर्सिटी ग्वालियर
[3]शोध छात्र,
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर, भारत।

Email Id: –jadonpriyanka003@gmail.com

सरसों एवं राई की गिनती भारत की प्रमुख तीन तिलहनी फसलों (सोयाबीन, मूंगफली एवं सरसो) में होती है । विश्व में यह सोयाबीन और पाम के तेल के बाद तीसरी सब से ज्यादा महत्तवपूर्ण फसल है। सरसों भारत में मुख्य रूप से हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र की एक प्रमुख फसल है। यह प्रमुख तिलहन फसल है। सरसों की खेती खास बात है की यह सिंचित और बारानी, दोनों ही अवस्थाओं में उगाई जा सकती है।

सरसों में कम लागत लगाकर अधिक आय प्राप्त की जा सकती है। इसके हरे पौधों का प्रयोग जानवरों के हरे चारे के रूप में लिया जा सकता है। साथ ही पशु आहार के रूप में बीज, तेल, एंव खली को काम में ले सकतें हैं क्यो कि इनका प्रभाव शीतल होता है जिससे यें कई रोगो की रोकथाम में सहायक सिद्ध होते है इसकी खली में लगभग 4 से 9 प्रतिशत नत्रजन 2.5 प्रतिशत फॉस्फोरस एवं 1.5 प्रतिशत पोटाश होता है। अतः कई देशों में इसका उपयोग खाद की तरह किया जाता है किन्तु हमारे देश में यह केवल पशुओ को खिलाई जाती है।

सरसों की उन्नत खेती के लिए मिट्टी और खेत की तैयारी

सरसों की खेती रेतीली से लेकर भारी मटियार मृदाओं में की जा सकती है। लेकिन बलुई दोमट मृदा सर्वाधिक उपयुक्त होती है। इसे भुरभुरी होना चाहिए, क्योंकि ऐसी मिट्टी में ही सरसों के छोटे–छोटे बीजों का जमाव अच्छा होता है। यह फसल हल्की क्षारीयता को सहन कर सकती है। लेकिन मृदा अम्लीय नही होनी चाहिए।

पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए इसके बाद हैरो से एक क्रास जुताई और फिर कल्टीवेटर से जुताई करके पाटा लगाना चाहिए। सरसों की खेती के लिए भूमि को देसी हल या कल्टीवेटर से दो या तीन बार जोताई करें और प्रत्येक जोताई के बाद सुहागा फेरें। बीजों के एकसार अंकुरित होने के लिए बैड नर्म, गीले और समतल होने चाहिए। सीड बैड पर बोयी फसल अच्छी अंकुरित होती है।

उपयुक्त जलवायु

भारत में सरसों की खेती शीत ऋतु में की जाती है। इस फसल को 18 से 25° सेल्सियस तापमान की आवष्यकता होती है। सरसों की फसल के लिए फूल आते समय वर्षा, अधिक आर्द्रता एवं वायुमण्ड़ल में बादल छायें रहना अच्छा नही रहता है। अगर इस प्रकार का मौसम होता है, तो फसल पर माहू या चौपा के आने की अधिक संभावना हो जाती हैं।

खाद एवं उर्वरक

सरसों की खेती के लिए खेत की तैयारी के समय अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 7–12 टनध्एकड़ की दर से मिट्टी में अच्छी तरह से मिला देना चाहिए। खादों के सही प्रयोग के लिए मिट्टी की जांच करवायें।

सरसों में 40 किलो नाइट्रोजन (90 किलो यूरिया), 12 किलो फासफोरस (75 किलो सिंगल सुपर फासफेट) और 6 किलो पोटाशियम (10 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रति एकड़ डालें। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सारी खाद बिजाई से पहले डालें। सरसों के लिए खाद की आधी मात्रा बिजाई से पहले और आधी मात्रा पहला पानी लगाते समय डालें। ध्यान रहे रासायनिक उर्वरक मिट्टी परिक्षण के आधार पर ही प्रयोग करें।

सरसों के बीज की बुआई

सरसों के लिए 4 से 5 किलो ग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त रहता है। बारानी इलाकों में सरसों की बुआई 25 सितम्बर से 15 अक्टूबर तथा सिचिंत खेतों में 10 अक्टूबर से 25 अक्टूबर के बीच करनी चाहिए। फसल की बुआई पंक्तियों में करनी चाहिए। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 से 50 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। सिचिंत क्षेत्रों में फसल की बुआई पलेवा देकर करनी चाहिए। बिजाई के 3 सप्ताह बाद कमजोर पौधों को नष्ट कर दें और सेहतमंद पौधों को खेत में रहने दें।

बीज का उपचार

बीज को मिट्टी के अंदरूनी कीटों और बीमारियों से बचाने के लिए बीजों को 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचार करें।

सिंचाई

फसल की बुवाई सिंचाई के बाद करें। अच्छी फसल लेने के लिए बुवाई के बाद तीन हफ्तों के फासले पर तीन सिंचाइयों की जरूरत होती है। जमीन में नमी को बचाने के लिए जैविक खादों का अधिक प्रयोग करें।

सरसों की खेती की उन्नत तकनीक

किस्म	पकने की अवधि (दिन)	औसत उपज (क्विंटल/हेक्टेयर)	विशेषताएँ
पूसा जय किसान	125-130	18-20	सफ़ेद रोली, उखटा और तुलासिता रोग रोधी, सिचिंत तथा असिचिंत (बारानी) खेतों के लिए उपयुक्त।
आशीर्वाद	125-130	16-18	देरी से बुआई की जा सकती है। सिचिंत खेतों के लिए उपयुक्त।
RH 30	130-135	18-20	दाने मोटे होते हैं। मोयला का प्रकोप कम। सिचिंत और असिचिंत खेतों के लिए उपयुक्त।
पूसा बोल्ड	125-130	18-20	दाने मोटे होते हैं। रोग कम लगते हैं।
लक्ष्मी (RH 8812)	135-140	20-22	फलियाँ पकने पर चटकती नहीं। मोटा और काला दाना।

सरसों की खेती के लिए उन्नत किस्मों का ही इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि इसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता और उत्पादकता बेहतर होती है।

एक ही खेत में लगातार सरसों की फसल नहीं उगाना चाहिए।

कीट प्रबन्धनः सरसों की खेती में कीटों का प्रकोप पूरे देश में पाया जाता है। सरसों की पैदावार को घटाने में कीटों की बड़ी भूमिका होती है। मेरठ स्थित सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों के अनुसार, कीटों और बीमारियों से रबी की तिलहनी फसलों को सालाना 15–20 प्रतिशत तक नुकसान पहुँचाता है। इससे किसान बहुत हतोत्साहित होते हैं। बेमौसम की बारिश से बढ़ने वाली नमी और धूप के कमी की वजह से सरसों की फसल में लगने वाले कीट तेजी से फैलते हैं। कभी–कभार ये कीट उग्र रूप धारण कर लेते हैं तथा फसलों को अत्याधिक हानि पहुँचाते हैं। इसीलिए सरसों या तिलहनी फसलों को कीटों और बीमारियों से बचाना बेहद जरूरी है।

फसल चक्रः

खरपतवार के टिकाऊ उपचार में फसल चक्र अपनाने से बहुत फायदा होता है। फसल चक्र का अधिक पैदावार प्राप्त करने, मिट्टी का उपजाऊपन बनाये रखने तथा बीमारियों और कीट से रोकथाम में भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। मूँग–सरसों, ग्वार–सरसों, बाजरा–सरसों जैसे एक वर्षीय फसल चक्र तथा बाजरा–सरसों–मूँगध्ग्वार–सरसों का दो वर्षीय फसल चक्र में उपयोग करना बेहद लाभकारी साबित होता है। बारानी इलाकों में जहाँ सिर्फ रबी में फसल ली जाती हो वहाँ सरसों के बाद चना उगाया जा सकता है।

खरपतवार नियंत्रण

सरसों की खेती में खरपतवार की रोकथाम के लिए 15 दिनों के फासलो में 2–3 निराई–गुड़ाई करें।

कटाई एवं गहाई

फसल अधिक पकने पर फलियों के चटकने की आशंका बढ़ जाती है। अतः पोधों के पीले पड़ने एवं फलियां भूरी होने पर फसल की कटाई कर लेनी चाहिए। फसल को सूखाकर थ्रेसर या डंडों से पीटकर दाने को अलग कर लिया जाता है। बीजों को सुखाने के बाद बोरियों में या ढोल में डालें। और नमी रहित स्थान पर भण्डारित करें।

उत्पादन

सरसों की उपरोक्त उन्नत तकनीक द्वारा खेती करने पर असिंचित क्षेत्रो में 15 से 20 क्विंटल तथा सिंचित क्षेत्रो में 20 से 30 क्विंटल प्रति हैक्टेयर दाने की उपज प्राप्त हो जाती है। सरसों में कम लागत लगाकर अधिक आय प्राप्त की जा सकती है।